सर्वनाम

अस्मद्

इससे पहले कि आप सर्वनाम के अर्थ को जानें, हम आपको पुरुष के बारे में बताना चाहेगें। इससे आपको अनुवाद करने अथवा अर्थ समझने में परेशानी नहीं होगी।

जैसा कि आप जानते हैं, संस्कृत में तीन वचन (एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन) होते हैं। वैसे ही, पुरुष भी तीन प्रकार के होते हैं। यहाँ पुरुष का अर्थ पुँल्लिङ्ग से नहीं है।

(1) प्रथम पुरुष (सः, तौ, ते, सा, ते, ता, तत्, ते, तानि, तेन, तया, तौ)

(2) मध्यम पुरुष (त्वम्, युवाम्, यूयम्)

(3) उत्तम पुरुष (अहम्, आवाम्; वयम्)

इनका प्रयोग धातुरुप एवं क्रिया पदों के साथ होता है।

सर्वनाम

वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।

<u>रामः</u> भोजन खादति।

<u>सः</u> भोजनं खादति।

यहाँ रामः के स्थान पर प्रयुक्त शब्द 'सः (वह)' सर्वनाम है।

अब हम कुछ सर्वनाम शब्दों से परिचय करेंगे।

अस्मद्

यहाँ हम आपको 'अस्मद्' (मैं) शब्द रुप से परिचय कराएंगे। इसके बाद इन शब्दों के आधार पर वाक्य बनाने का भी प्रयास करेंगे।

आइए अब इन शब्द रुपों पर एक नज़र डालते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन

प्रथमा विभक्ति	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया विभक्ति	माम्/मा	आवाम्/नौ	अस्मान्/न:
तृतीया विभक्ति	मया	आवाभ्याम्	अस्माभि:
चतुर्थी विभक्ति	मह्यम्/मे	आवाभ्याम्/नौ	अस्मभ्यम्/न:
पञ्चमी विभक्ति	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी विभक्ति	मम/मे	आवयो:/नौ	अस्माकम्/न:
सप्तमी विभक्ति	मयि	आवयो:	अस्मासु

अहं पठामि।	मैं पढ़ता हूँ।	प्रथमा विभक्ति
अहं गच्छामि।	मैं जाता हूँ।	प्रथमा विभक्ति
अहं वदामि।	मैं बोलता हूँ।	प्रथमा विभक्ति
अहं नमामि।	मैं नमस्कार करता हूँ।	प्रथमा विभक्ति

वयं पठामः।	हम सब पढ़ते हैं।	प्रथमा विभक्ति
वयं गच्छामः।	हम सब जाते हैं।	प्रथमा विभक्ति
वयं वदामः।	हम सब बोलते हैं।	प्रथमा विभक्ति
वयं नमामः।	हम सब नमस्कार करते हैं।	प्रथमा विभक्ति

चित्रं माम् पश्येयम्।	मुझे चित्र देखने दो।
भगवनं माम् नमेयम्।	मुझे भगवान को नमस्कार करने दो।
श्लोकं माम् स्मरेयम्।	मुझे श्लोक याद करने दो।
जलं माम् पिबेयम्।	मुझे जल पीने दो।
अध्यापकः माम् प्रश्नं पृच्छति	अध्यापक मुझसे प्रश्न पूछता है।
रामः माम् नगरं नयति	राम मुझको नगर ले जाता है।
नृपः माम् दण्डयति	राजा मुझको दण्ड देता है।

आचार्यः माम् धर्मं शासति।	आचार्य मुझको धर्म सिखाता है।
मम नाम: राम: अस्ति।	मेरा नाम राम है।
मम पितु: नाम दशरथऽस्ति।	मेरे पिता का नाम दशरथ है।
मम पार्श्वे अनेकानि कन्दुकानि सन्ति।	मेरे पास बहुत सारी गेंदें हैं।
मम विद्यालय: ग्रामे अस्ति।	मेरा विद्यालय गाँव में है।
भारत अस्माकं राष्ट्र अस्ति।	भारत हमारा राष्ट्र है।
अस्माकं प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह अस्ति।	हमारे प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह हैं।
अस्माकं विद्यालये निपुणा छात्रा: पठन्ति।	हमारे विद्यालय में निपुण छात्र पढ़ते हैं।
अस्माकं गृहे विविधानि वस्तूनि सन्ति।	हमारे घर में अनेक प्रकार की वस्तुएं हैं।
अस्माकं शहरे चिकित्सालयं:, मनोरञ्जन स्थलं च स्त:।	हमारे शहर में चिकित्सालय और मनोरञ्जन स्थल हैं।

युष्मद्

अब हम आपको युष्मद् (तू, तुम) शब्द रुपों से परिचय करवाएंगे।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा विभक्ति	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया विभक्ति	त्वाम्/त्वा	युवाम्/वाम्	युष्मान्/वः
तृतीया विभक्ति	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी विभक्ति	तुभ्यम्/ते	युवाभ्याम/वाम्	युष्मभ्यम्/वः
पञ्चमी विभक्ति	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी विभक्ति	तव/ते	युवयोः/वाम्	युष्माकम्/वः
सप्तमी विभक्ति	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अब हम इनके आधार पर कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करेंगे।

त्वं पठसि। तुम पढ़ते हो।

त्वं गच्छसि। तुम जाते हो।

त्वं वदसि।	तुम बोलते हो।
त्वं नमसि।	तुम नमस्कार करते हो।
यूयं पठथ।	तुम सब पढ़ते हो।
यूयं गच्छथ।	तुम सब जाते हो।
यूयं वदथ।	तुम बोलते हो।
यूयं नमथ।	तुम नमस्कार करते हो।
अध्यापक: त्वाम् प्रश्नं पृच्छति	अध्यापक तुमसे प्रश्न पूछते हैं।
राम: त्वाम् नगरं नयति	राम तुमको नगर ले जाता है।
नृप: त्वाम् दण्डयति।	राजा तुमको दण्ड देता है।
आचार्य: त्वाम् धर्मं शासति	आचार्य तुमको धर्म सिखाता है।

अध्यापक: युषमान् प्रश्नं पृच्छति।	अध्यापक तुम सबसे प्रश्न पूछते हैं।
राम: युष्मान् नगरं नयति।	राम तुम सबको नगर ले जाता है।

नृपः युष्मान् दण्डयति।	राजा तुम सबको दण्ड देता है।
आचार्यः युष्मान् धर्मं शासति।	आचार्य तुम सबको धर्म सिखाता है।
तव नामः रामः अस्ति।	तुम्हारा नाम राम है।
तव पितुः नामः दशरथ अस्ति।	तुम्हारे पिता का नाम दशरथ है।
तव पार्श्वे अनेकानि कन्दुकानि सन्ति।	तुम्हारे पास बहुत सारी गेंदें हैं।
तव विद्यालयः ग्रामे अस्ति।	तुम्हारे विद्यालय गाँव में हैं।
युष्माकं राष्ट्रऽपि भारत अस्ति।	भारत तुम्हारा भी राष्ट्र है।
युष्माकं प्रधानमंत्रीऽपि डा. मनमोहन सिंहः अस्ति।	तुम्हारे प्रधानमंत्री भी डा. मनमोहन सिंह हैं।
युष्माकं विद्यालये निपुणाः छात्राः पठन्ति।	तुम्हारे विद्यालय में निपुण छात्र पढ़ते हैं।
युष्माकं गृहे विविधानि वस्तूनि सन्ति।	तुम्हारे घर में बहुत सारी वस्तुएँ हैं।
युष्माकं नगरे चिकित्सालयः मनोरञ्जन स्थलं च स्तः।	तुम्हारे शहर में चिकित्सालय और मनोरञ्जन स्थल हैं।

तद्

यहाँ हम आपको 'तद्' (वह) शब्द रुपों से परिचय कराएंगे। तत्पश्चात् इन शब्दों का प्रयोग करके कुछ सरल वाक्य बनाने का भी प्रयास करेंगे।

अब हम तद् (वह) पुँल्लिङ्ग के रुपों पर एक नज़र डालते हैं।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा:	सः	तौ	ते

द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् (वह) नंपुसकलिंङ्ग के रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमाः	तत्	ते	तानि
द्वितीया	**तत्**	**ते**	**तानि**
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः

चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्य:
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्य:
षष्ठी	तस्य	तयो:	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयो:	तेषु

आप इन दोनों शब्द रुपों में देख सकते हैं कि दोनों के रुप लगभग समान हैं। परन्तु नपुँसकलिंङ्ग के प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति के रुप में भिन्नता है। यदि आप दोनों में कोई भी एक रुप याद कर लेते हैं तो दूसरा स्वत: हीं आपको याद हो जाएगा।

तद (वह) स्त्रीलिंग के रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा:	सा	ते	ता:
द्वितीया	ताम्	ते	ता:
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभि:
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्य:

पञ्चमी	तस्या:	ताभ्याम्	ताभ्य:
षष्ठी	तस्या:	तयो:	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयो:	तासु

आप इन शब्द रुपों को दिन में कम-से-कम एक बार अवश्य देखें। ऐसा करने से ये स्वत: हीं आपको याद हो जाएंगे।

अब हम इन शब्द रुपों के आधार पर कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करेंगे।

स: पाठं पठति।

वह पाठ पढ़ता है।

सा तेन सह गृहं गच्छति।

वह उसके साथ घर जाती है।

तस्मै देवाय: नम:।

उस देवता को नमस्कार है।

तै: केन सह ओदनं खादन्ति?

वे किनके साथ चावल खाते हैं?

स: तस्मात् वनात् विभेति।

वह उस वन से डरता है।

तस्मिन् गृहे अहं प्रविष्यामि।

मैं उस घर में प्रवेश करूँगा।

तेषाम् सेवका: निर्धन: सन्ति।

उनके सेवक (नौकर) ग़रीब हैं।

तस्मिन वृक्षे एकस्य शुकस्य: नीड़म् अस्ति।

उस वृक्ष पर एक तोते का घोंसला है।

आप उपरोक्त वाक्यों में रेखाङ्कित शब्दों में प्रयुक्त विभक्तियों की पहचान कीजिए।

SCROLL DOWN FOR THE NEXT TOPIC

एतद्

एतद (यह) पुँल्लिङ्ग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	एष:	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतै:
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्य:
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्य:
षष्ठी	एतस्य	एतयो:	एतेषाम्

सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतद (यह) नपुंसकलिंग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा:	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	**एतत्**	**एते**	**एतानि**
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

अगर आप उपरोक्त दोनों रुपों को देखें तो सिर्फ प्रथमा, द्वितीया विभक्ति के रुप ही अलग हैं। अतः इसमें भी आपको मात्र दो शब्द रुप ही याद करने पड़ेंगे।

एतद (यह) स्त्रीलिंग के शब्द रुप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा:	एषा	एते	एता:
द्वितीया	एताम्	एते	एता:
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभि:
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्य:
पञ्चमी	एतस्या:	एताभ्याम्	एताभ्य:
षष्ठी	एतस्या:	एतयो:	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयो:	एतासु

अब हम उपरोक्त दिए गए रुपों के आधार पर कुछ सरल वाक्य बनाने का प्रयास करेंगे।

<u>एष:</u> पाठं पठति।

यह पाठ पढ़ता है।

सा <u>एतेन</u> सह गृहं गच्छति।

वह इसके साथ घर जाती है।

<u>एतस्मै</u> देवाय: नम्:।

इन देव को नमस्कार है।

एते केन सह ओदनं खादन्ति?

ये किनके साथ चावल खाते हैं?

स: एतस्मात् वनात् विभेति।

वह इस वन से डरता है।

एतस्मिन गृहे अहं प्रविष्यामि।

इस घर में मैं प्रवेश करुँगा।

एतेषाम् सेवका: निर्धना: सन्ति।

इनके सेवक (नौकर) ग़रीब हैं।

एतस्मिन् वृक्षे एकस्य शुकस्य नीडम् अस्ति।

इस वृक्ष पर एक तोते का घोंसला है।

आप उपरोक्त वाक्यों में रेखाङ्कित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति की पहचान करें और दिए गए शब्द रुपों के आधार पर कम-से-कम दो-दो वाक्य अवश्य बनाएं।

यत्

यहाँ हम पहले यत् 'शब्द' के सभी रुपों को जानने का प्रयास करेगें। उसके बाद, हम इन रुपों के आधार पर वाक्य बनाएंगे।

यत् (जो) पुँल्लिगं के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	य:	यौ	ये

द्वितीया विभक्ति	यम्	यौ	यान्
तृतीया विभक्ति	येन	याभ्याम्	यै:
चतुर्थी विभक्ति	यस्मै	याभ्याम्	येभ्य:
पञ्चमी विभक्ति	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्य:
षष्ठी विभक्ति	यस्य	ययो:	येषाम्
सप्तमी विभक्ति	यस्मिन्	ययो:	येषु

यत् (जो) नपुँसकलिंग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	यत्	ये	यानि
द्वितीया विभक्ति	**यत्**	**ये**	**यानि**
तृतीया विभक्ति	येन	याभ्याम	यै:

चतुर्थी विभक्ति	यस्मै	याभ्याम्	येभ्य:
पञ्चमी विभक्ति	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्य:
षष्ठी विभक्ति	यस्य	ययो:	येषाम्
सप्तमी विभक्ति	यस्मिन्	ययो:	येषु

आपको यहाँ केवल प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति के ही रुप याद करने पडेंगे क्योंकि अन्य सभी रुप पुँल्लिंग जैसे ही हैं।

यत् (जो) स्त्रीलिंग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	या	ये	या:
द्वितीया विभक्ति	याम्	ये	या:
तृतीया विभक्ति	यया	याभ्याम्	याभि:
चतुर्थी विभक्ति	यस्यै	याभ्याम्	याभ्य:

पञ्चमी विभक्ति	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी विभक्ति	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी विभक्ति	यस्याम्	ययोः	यासु

आइए अब हम इनके आधार पर कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करें।

यः बालकः पाठं पठति सः मम भ्राता अस्ति।

जो बालक पाठ पढ़ता है, वह मेरा भाई है।

यस्मै देवायः नमः।

उन देवता को नमस्कार है।

यैः केन सह गच्छन्ति?

ये किनके साथ जाते हैं?

तस्मिन् गृहे यः प्रविष्यति।

उस घर में जो प्रवेश करेगा।

येषाम् कस्य परिजनाः सन्ति?

ये किनके परिजन हैं?

येभ्यः पुस्तकानि बालिकायै सन्ति।

ये पुस्तकें बालिकाओं के लिए हैं।

यस्मिन् वृक्षे एकस्य शुकस्य नीडम् अस्ति।

इस वृक्ष पर एक तोते का घोंसला है।

आप उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति का पता लगाएँ तथा अन्य शब्दों की सहायता से कुछ नए वाक्य बनाने का प्रयास करें।

इदम्

यहाँ हम पहले इदम् (यह) शब्द के सभी रुपों को जानने का प्रयास करेंगे। उसके बाद इन रुपों के आधार पर वाक्य बनाएंगे।

इदम् (यह) पुँल्लिंग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया विभक्ति	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया विभक्ति	अनेन	आभ्याम्	एभि:
चतुर्थी विभक्ति	अस्मै	आभ्याम्	एभ्य:
पञ्चमी विभक्ति	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य:
षष्ठी विभक्ति	अस्य	अनयो:	एषाम्
सप्तमी विभक्ति	अस्मिन्	अनयो:	एषु

इदम् (यह) नपुँसकलिंग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया विभक्ति	**इदम्**	**इमे**	**इमानि**
तृतीया विभक्ति	अनेन	आभ्याम्	एभि:
चतुर्थी विभक्ति	अस्मै	आभ्याम्	एभ्य:
पञ्चमी विभक्ति	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य:
षष्ठी विभक्ति	अस्य	अनयो:	एषाम्
सप्तमी विभक्ति	अस्मिन्	अनयो:	एषु

'इदम' (यह) स्त्रीलिंग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	इयम्	इमे	इमा:

द्वितीया विभक्ति	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया विभक्ति	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी विभक्ति	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी विभक्ति	आस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी विभक्ति	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी विभक्ति	अस्याम्	अनयोः	आसु

आइए अब इनके आधार पर कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करें।

सः इदं पाठं पठति।

वह यह पाठ पढ़ता है।

अयं तेन सह गृहं गच्छति।

यह उसके साथ घर जाता है।

सः अस्मात् वनात् विभेति।

वह इस वन से डरता है।

अहं अस्मिन् याने गमिष्यामि।

मैं इस वाहन में जाऊँगा।

अस्मिन् वृक्षे अनेकानि फलानि सन्ति।

इस वृक्ष में बहुत सारे फ़ल हैं।

आप उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति की पहचान करें तथा इन शब्दों के आधार पर कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करें।

सर्व

यहाँ हम आपको सर्व (सब) शब्द रुपों से परिचय कराएंगे। तत्पश्चात् इन शब्दों का प्रयास करके कुछ सरल वाक्य बनाने का भी प्रयास करेंगे।

सर्व (सब) पुँल्लिंग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	सर्व:	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया विभक्ति	सर्वम्	सर्वो	सर्वान्
तृतीया विभक्ति	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वै:
चतुर्थी विभक्ति	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
पञ्चमी विभक्ति	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
षष्ठी विभक्ति	सर्वस्य	सर्वयो:	सर्वेषाम्

सप्तमी विभक्ति	सर्वस्मिन्	सर्वयो:	सर्वेषु

सर्व (सब) नपुँसकलिंग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया विभक्ति	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया विभक्ति	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी विभक्ति	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
पञ्चमी विभक्ति	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
षष्ठी विभक्ति	सर्वस्य	सर्वयो:	सर्वेषाम्
सप्तमी विभक्ति	सर्वस्मिन्	सर्वयो:	सर्वेषु

सर्व (सब) स्त्रीलिंग के शब्द रुप

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**

प्रथमा विभक्ति	सर्वा	सर्वे	सर्वा:
द्वितीया विभक्ति	सर्वाम्	सर्वे	सर्वा:
तृतीया विभक्ति	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभि:
चतुर्थी विभक्ति	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:
पञ्चमी विभक्ति	सर्वस्या:	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:
षष्ठी विभक्ति	सर्वस्या:	सर्वयो:	सर्वासाम्
सप्तमी विभक्ति	सर्वस्याम्	सर्वयो:	सर्वासु

आइए अब हम उपरोक्त शब्दों के आधार पर कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करें।

सर्वे पठन्ति।

सभी पढ़ते हैं।

सर्वे वदन्ति।

सभी बोलते हैं।

सर्वस्मिन् गृहेषु देवालय: अस्ति।

सभी के घरों में मन्दिर है।

सर्वेभ्य: देवेभ्य नम:।

सभी देवताओं को नमस्कार है।

<u>सर्वे</u> जना: तत्र कानि-कानि कार्याणि कुर्वन्ति?

सभी लोग वहाँ क्या-क्या कार्य करते हैं?

आम जना: <u>सर्वेण</u> सह गच्छन्ति।

आम लोग सभी के साथ जाते हैं।

प्रात: काले <u>सर्वे</u> अर्चका: पूजां कुर्वन्ति।

सुबह के समय सभी पुजारी पूजा करते हैं।

अत्र <u>सर्वेषु</u> वृक्षेषु मधुराणि फलानि सन्ति।

यहाँ सभी वृक्षों पर मीठे फ़ल लगे हुए हैं।

आप उपरोक्त वाक्यों में प्रयुक्त विभक्तियों का पता लगाए तथा उपरोक्त शब्दों के आधार पर कुछ और वाक्य बनाने का प्रयास कीजिए।